-: आदर्श :-

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 22.6.88.

आदर्श जिन्दगी में अच्छे गुणों के साथ होते हैं । जब हम किसी दर्जी के पास अपना कपड़ा सिलाने जाते हैं तो सबसे पहले वह अपने फीते से हमारे शरीर का नाप लेता है और फिर हमारे खरीदे ~~गये~~ कपड़े को नापता है । यदि कपड़ा हमारे नाप के मुताबिक सही होता है तो सच्चा व ईमानदार दर्जी कपड़ा सिलने के लिए हाँ करता है नहीं तो सिलने ~~के लिए~~ पहले ही इन्कार कर देता है । ~~और~~ यदि चालाक या धोखेबाज दर्जी होगा तो कम कपड़े को भी सिलने के लिए हाँ कर देगा क्योंकि उसका मुनाफा सिर्फ अपनी सिलाई का खर्च लेने तक ही सीमित होता है नाकि ग्राहक की सुविधा का ।

हर मनुष्य अपने जीवन में सच्चाई और ईमानदारी जैसी अच्छी आदतें सीखने की कोशिश करता है । जो सच्चा होता है वह अपने साथ के अनुसार सिर्फ सच्चे लोगों, रिश्तेदारों के साथ अपना रिश्ता नाता जोड़ता है। जिस समय उसके जाने पहचाने उसके साथ छल कपट व हेरा फेरी करें तो वह उनका साथ छोड़ देता है है ~~।~~ क्योंकि वह उसके आदर्शों के मुताबिक ठीक नहीं बैठते ।

हर समय हम अपने आदर्शों/असूलों को नहीं दिखा सकते क्योंकि कभी न कभी थोड़ा बहुत समझौता करना ही पड़ता है नहीं तो संसार में जीना मुश्किल हो जायेगा। जैसे जिस माँ का बच्चा बार-बार झूठ बोले ~~तो~~ उसे माँ पहले काफी समझाती है ताकि वह उसके साथ के मुताबिक सच्च बोल सके । यदि फिर भी कभी-कभी बच्चा झूठ बोलता है तो माँ बच्चे के साथ थोड़ा बहुत समझौता करके ही जिन्दा रहती है परन्तु अपने प्रिय बच्चे ~~को~~ को नहीं छोड़ती । ~~अक्सर~~ देखने में आता है कि बच्चे ज्यादातर माँ बाप की आदतों/आदर्शों को ही अपनाते हैं ।

संसार में ऐसे कई मनुष्य पैदा हुए हैं जिन्होंने बहुत अच्छे आदर्शों का सबूत दिया है । ~~अब्राहम~~ लिंकन, महात्मा गांधी, वी. आई. लेनिन, गुरू ~~नानक~~ नानक आदि ऐसे महान लोग थे जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में फंसकर अपने आदर्शों ~~को~~ को नहीं छोड़ा । इसीलिए आज दुनिया उनके दिखाये गये मार्ग पर चल रही है ।

सोने की कीमत सिर्फ जौहरी ही जानता है । जो मनुष्य अपने असूलों/आदर्शों वाले होते हैं वे ही दूसरे असूलों/आदर्शों वाले मनुष्य की कदर कर सकता है । जीवन में हर मनुष्य अपने असूलों/आदर्शों का ढिंढोरा पीटता है मगर सिर्फ समाज के सदस्य ही उसके काम और आदतें देखकर यह फैसला करते हैं कि उसने असूल व आदर्श का पालन किया है या फिर लोभ-मोह में फंसकर सिर्फ फिसलता ही रहा है । वह जिन्दगी खूबसूरत है जिसमें ~~जितने~~ आदर्शों के साथ कम समझौता किया जाये। जो मनुष्य किसी उद्देश्य को पाने के लिए ~~अपने~~ दीन-ईमान बेचकर अपनी इज्जत व मान के साथ समझौता करते हैं वह हमेशा समाज के कलंक बने रहते हैं चाहे वे बाद में कितने ही अमीर क्यों न बन जायें । असूल/आदर्श अच्छे इन्सानों के प्रतीक होते हैं । कायर लोग कभी आदर्शों की इज्जत नहीं करते क्योंकि वह हर समय अपनी बात को ~~बदलते~~ अपने स्वार्थ के लिए बदलते रहते हैं ।

शिक्षा : - हमें एक आदर्श व्यक्ति बनकर जीना चाहिये ।